सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का अष्टम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् डॉ. प्रवीण पण्ड्या द्वारा लिखित 'दश वाद और ब्रह्मसिद्धान्त' लेख में सृष्टि प्रक्रिया के वैदिक पूर्व पक्ष एवं उत्तर पक्ष को दर्शाते हुये सृष्टि उत्पत्ति विषयक सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ब्रह्माण्डमण्डलपरिज्ञानम् (३)' शोधलेख में वेद विज्ञान में प्रतिपादित ब्रह्माण्ड के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। डॉ. रघुवरीप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'पथ्यास्वस्ति : एकम् अनुशीलनम्' शोध लेख में व्याकरण एवं भाषाशास्त्र के अनेक विषयों की समीक्षा करते हुए पं. मधुसूदन ओझा के सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है। श्रीमती अंजना शर्मा द्वारा लिखित 'राष्ट्रियसमरसतायाःसंस्थापका जगद्गुरवः स्वामिनो रामानन्दाचार्याः' शोधलेख में स्वामी रामानन्द के राष्ट्रीय अवदान की प्रस्तुति करते हुये समाजोद्धार के क्षेत्र में उनके सराहनीय कार्यों का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थी मुकेश कुमार मीना द्वारा लिखित 'धर्मशास्त्र में स्त्री एवं स्त्री शिक्षा'शोधलेख में मनु एवं याज्ञवल्क्य के मतानुसार भारतीय महिला की सामाजिक स्थिति का धार्मिक सन्दर्भ में विश्लेषण किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा